



किताब! किताब! किताब!



चित्र टिफानी बीके

डेबोरा ब्रुस

 SCHOLASTIC

किताब! किताब! किताब!



डेबोरा ब्रुस

चित्र टिफानी बीके

अनुवाद अरुंधती देवस्थले



एकलव्य के लिए

स्कॉलास्टिक द्वारा प्रकाशित

मेरी माँ को उनके साथ के लिए
मेरे पिता को उनके हँसी-मजाक के लिए

— डेबोरा ब्रुस

माइक और बाल्डर के लिए

प्यार के साथ

— टिफानी बीके



खेत पर सब कुछ ठीक-ठाक था, जब तक कि...







बच्चे स्कूल ना चले गए और जानवरों के पास
करने को कुछ भी न बचा।



न कोई उन पर सवारी करने वाला था, न रस्साकशी का खेल करने वाला। न कोई कान खुजलाने वाला और न ही उनके पंरों को उलझाने-बिखराने वाला।



सुबह की धूप में घोड़ा सिर झुकाए खड़ा हो गया,



गाय शिकायत करने लगी,



और बकरा बड़बड़ाने लगा ।



सूअर ने मुँह बिचकाया,



बत्तख ऊँघने लगी,



और मुर्गी ने गहरी साँस छोड़ी ।

दोपहर, जब खलिहान पर सूरज ऊँचा चढ़ आया तो
मुर्गी कुड़कुड़ाई, “मैं तो ऊब गई। मैं शहर जाकर
करने लायक कुछ ढूँढती हूँ!”

सभी जानवर उसके पीछे-पीछे चल दिए।





पुस्तकालय

“वह देखो!” मुर्गी कुड़कुड़ाई। “कितने खुश चेहरे हैं।
यही वह जगह होगी जिसे हम ढूँढ रहे हैं। मैं अन्दर जाकर
देखती हूँ कि मुझे कुछ करने को मिले।”

“ना! ना!” घोड़ा हिनहिनाया। “इतने बड़े काम के लिए
तुम बहुत छोटी हो। इसे मुझ पर छोड़ दो।”



सार्वजनिक पुस्तकालय





टप्-टप् करता घोड़ा अन्दर गया। उसने बड़े अदब से कुछ काम माँगा। लेकिन अन्दर बैठी लाइब्रेरियन को घोड़े की बात समझ ही न आई। उसे सिर्फ हिनहिनाना सुनाई दिया। घोड़े ने सिर लटकाया और टप्-टप् करता बाहर आ गया।





फिर गाय अन्दर गई। उसने भी अदब से करने को
कुछ काम माँगा। लेकिन लाइब्रेरियन को गाय की
बात भी समझ न आई।



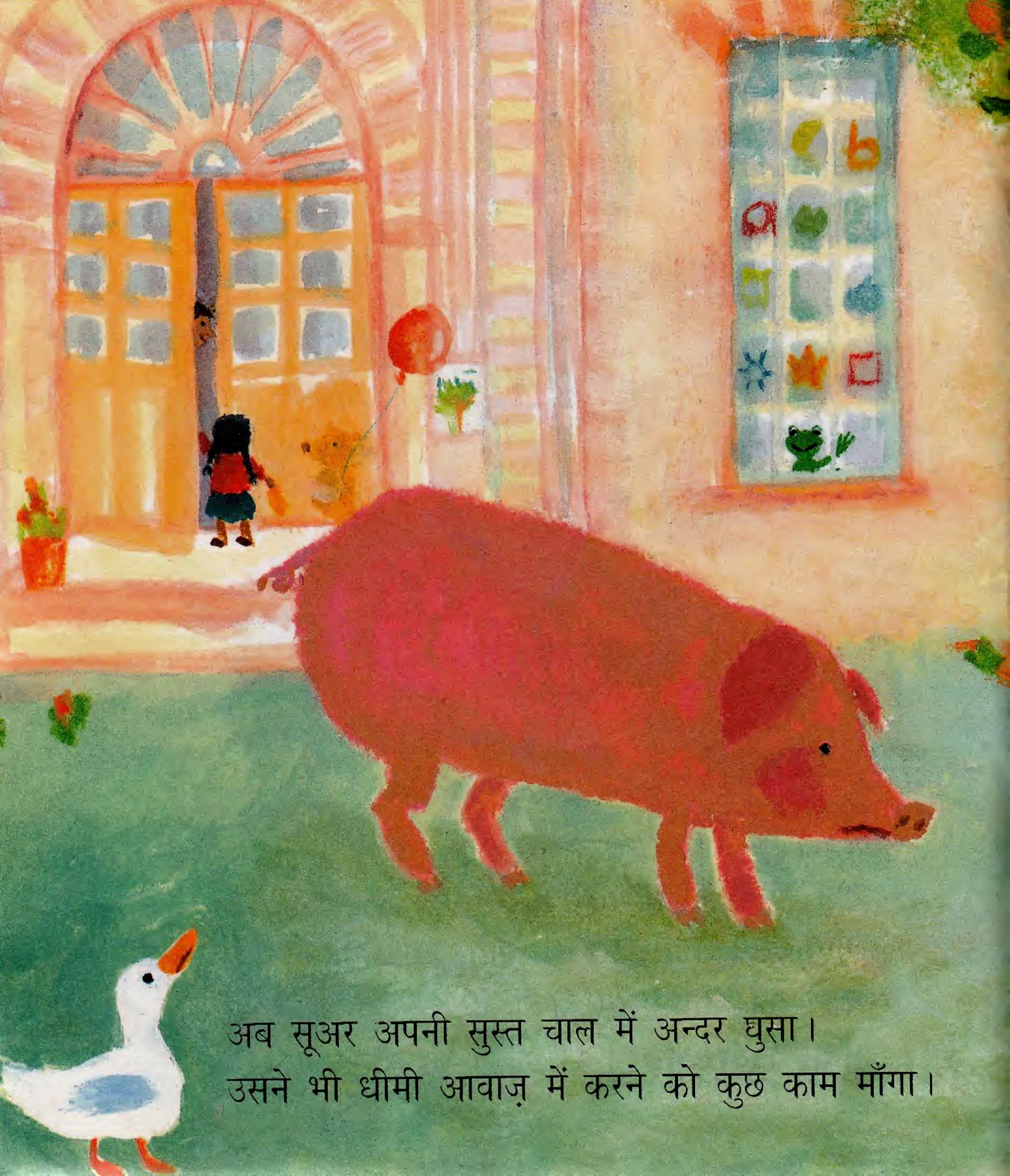
उसे तो बस “बाँ-बाँ” ही सुनाई दिया। गाय ने कुछ शिकायत की और तब बाहर चली आई।

24818
10/10/58





अब बकरे की बारी थी। वह तेज़ी से अन्दर गया
और उसने बड़ी नरमी से कुछ काम माँगा। लाइब्रेरियन
बकरे की बात समझ ही न सकी। उसे केवल “में-में”
सुनाई दिया। निराश हो बकरा भी लौट गया।



अब सूअर अपनी सुस्त चाल में अन्दर घुसा ।
उसने भी धीमी आवाज़ में करने को कुछ काम माँगा ।



पर लाइब्रेरियन ने सिर्फ “आँय-आँय” ही सुना। सूअर अपने दोस्तों को यह बताने हिलता-डुलता बाहर आ गया।

यह देख मुर्गी ने अपने पंख फड़फड़ाए और बोली,
“अब मैं जाती हूँ। देखती हूँ मुझे कौन रोकता है!”
पंख फड़फड़ाते वह पुस्तकालय में घुस गई।



“किताब!” मुर्गी ने धीमे-से कहा ।

लाइब्रेरियन ने चारों ओर देखा और पूछा,
“यह कैसी आवाज़ है?”

“किताब! किताब!” मुर्गी कुड़कुड़ाई ।



लाइब्रेरियन ने सिर खुजाया और पूछा,
“यह कौन है?”

“किताब! किताब! किताब!”
मुर्गी ने साफ-साफ कहा।

“ओ हो! तो तुम्हें यह चाहिए?” कहकर लाइब्रेरियन ने
मुर्गी को तीन किताबें पकड़ाईं।











खलिहान में लौटकर घोड़ा, गाय, बकरा, सूअर,
बत्तख और मुर्गी किताबों को घेरकर बैठ गए।



दिन भर खलिहान से हिनहिनाने, रम्भाने, कुड़कुड़ाने,
पैंक-पैंकाने और किताब-किताब-किताब! की आवाजें
आती रहीं। खुशी से भरी ये आवाजें सूरज ढलने तक
गूँजती रहीं।



सभी जानवर बेहद खुश थे....



...टर्-टर् मेंढक के सिवाए । पता है उसने क्या कहा?

६ ५३/३

विप्लव विद्या



“मैं तो यह पढ़ चुका हूँ!
पढ़ चुका हूँ, पढ़ चुका हूँ, पढ़ चुका हूँ...”

बच्चों के स्कूल चले जाने पर
जानवरों का दिल नहीं लगता ।
किससे खेलें, क्या करें वे ?
इसका समाधान निकालती है मुर्गी ।
जब सब जानवर खुश थे
तो मेंढक को क्या परेशानी थी ?



parag

एकलव्य के लिए

स्कॉलास्टिक द्वारा प्रकाशित



मूल्य 40 रुपए

ISBN-10 81-7655-906-7
ISBN-13 978-81-7655-906-5



9 788176 559065